ISSN : **2583-3189 (E), 2583-0775 (P)**
Year-03, Volume-03, Issue-02

AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. अंजना अग्रवाल
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
लालकोठी स्कीम, जयपुर, राजस्थान, भारत

शोध सार

मानव जीवन की क्रियाएँ अनेक भावों में विभक्त होती हैं और मानव अपने जीवन को इन्हीं के अनुरूप ढालना चाहता है, यदि उसे उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो जाता है तो उसके जीवन में सफलता निश्चित् है अन्यथा वह दिग्भ्रमित रहकर जीवन में असफल हो जाता है। यह निर्विवाद है कि व्यक्ति यदि उचित निर्देशन के बिना शिक्षा प्राप्त करता है तो उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास की आशा नहीं की जा सकती, ना ही वह अपनी प्रतिभा व योग्यताओं से समाज की समुचित सेवा कर सकता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर निर्देशन का एक महत्वपूर्ण कार्य किशोर विद्यार्थियों की योग्यताओं के विकास, रूचियों, आकांक्षाओं, भावी योजनाओं को पहचानने में सहायक होना है अर्थात् विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से समझना व तदनुरूप परिस्थितियों का निर्माण करना होना चाहिए। इस स्तर पर विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की समस्याओं यथा – अच्छी उपलब्धि की, समायोजन की स्वास्थ्य सम्बन्धी आदि का सामना करना पड़ता है। विद्यार्थियों की समस्याओं को आयु, लिंग, वातावरण, मानसिक योग्यताएँ, शैक्षणिक उपलब्धि, व्यक्तित्व शीलगुण आदि प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत शोध में इन समस्याओं को निम्नलिखित संदर्भों में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार के प्रश्न शिक्षाविद्ों, नीति निर्माताओं, प्रशासकों, निर्देशन कार्यकर्त्ताओं व शोधकर्त्ताओं के लिए विचारणीय है। इस दृष्टि से निरन्तर इस क्षेत्र में शोध कार्य हो रहे है परन्तु शोध कार्य की यथारूप में पुनरावृति न हो सके, इसके लिए इस क्षेत्र में शोधों का अध्ययन करना शोधार्थी ने उचित समझा। उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के प्रभाव के संदर्भ में अध्ययन न्यून दृष्टिगत हुए।

मुख्य शब्द

मानसिक योग्यताएँ, निर्देशन एवं परामर्श, शैक्षिक समस्या.

प्रस्तावना

यह तथ्य सर्वविदित है कि विद्यार्थियों की मूलभूत समस्याएं केवल शिक्षा तक सम्बन्धित नहीं है अपितु इसके अन्तर्गत पर्यावरण, निर्देशन एवं परामर्श का भी महत्त्व निहित है। आज का युग विज्ञान व तकनीक का युग है। आधुनिक युग में हुई वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप सामाजिक, सांस्कृतिक एवं औद्योगिक आदि सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं इनके कारण मानव जीवन अधिक जटिल होता जा रहा है। इसके जीवन की परिधि

व्यापक होती जा रही है और इस कारण व्यक्ति में तनाव, अन्तर्द्वन्द्व तथा व्यवहारजन्य अनेक समस्याएँ परिलक्षित हो रही हैं। मानव जीवन में समस्याओं का होना एक सामान्य वास्तविकता है। बहुपक्षीय मानव के बहुआयामी जीवन में पायी जाने वाली समस्याओं में भी वैभिन्य हो सकता है। समस्या का स्वरूप तथा उसकी संवेदना की गहनता व्यक्ति की प्रकृति तथा पृष्ठभूमि द्वारा अनुबन्धित होती है। इन समस्याओं का समाधान न किये जाने पर अनेकों दुष्परिणाम घटित हो सकते हैं। अतः सहज ही यह प्रश्न उठता है कि इन समस्याओं का समाधान किस प्रकार किया जाए? सामान्यतः तो व्यक्ति स्वयं ही इन समस्याओं का हल खोजने का प्रयास करता है फिर वह मित्रों, वयस्कों आदि से सहायता प्राप्त करता है, परन्तु अनेक प्रकार की समस्याओं के लिए उसे विशिष्ट सहायता की आवश्यकता होती है। यह विशिष्ट सहायता उसे विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा प्राप्त होती है। बालक को इस प्रकार की समस्याओं से उबारने के लिए आवश्यकता इस बात की है कि उसकी परवरिश गतिशील, संवेदनशील और सावधानीपूर्वक हो। प्रत्येक का अपना अनुपम व्यक्तित्व होता है और जिन्दगी के हर मुकाम पर उसकी समस्याएँ व आवश्यकताएँ होती है। शिक्षा विकास की पेचीदा और गतिशील प्रक्रिया में अपना उत्प्रेरक योगदान, उत्तम योजना निर्माण तथा उस पर पूरी तरह अमल करके दे सकती है। यह कार्य विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं द्वारा सम्पादित किया जा सकता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में निर्देशन अथवा मार्गदर्शन का अत्यन्त महत्त्व है। निर्देशन प्रणाली आदिकाल से ही किसी न किसी रूप में चली आ रही है। समय परिवर्तन के साथ निर्देशन के स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ है, क्योकि निर्देशन का स्वरूप समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, व्यावसायिक, शैक्षिक आदि परिस्थितियों पर निर्भर है। प्राचीन काल में निर्देशन का स्वरूप बहुत ही सरल था, क्योंकि व्यक्ति का जीवन साधारण था। उसकी आवश्यकताएँ भी सीमित थीं। उस समय बच्चों को निर्देशन उनके अभिभावकों द्वारा ही मिल जाता था। धीरे–धीरे मशीन के युग का प्रारम्भ हुआ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्ति आई, निर्देशन का स्वरूप भी बदला। आज जब व्यक्ति किसी कार्य को करने में असमर्थता का अनुभव करता है तो वह दूसरे व्यक्ति से परामर्श एवं निर्देशन चाहता है। इस प्राप्त निर्देशन से वह अपने कार्य में सफल हो जाता है। मानव जीवन की क्रियाएँ अनेक भावों में विभक्त होती हैं और मानव अपने जीवन को इन्हीं के अनुरूप ढालना चाहता है, यदि उसे उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो जाता है तो उसके जीवन में सफलता निश्चित् है अन्यथा वह दिग्भ्रमित रहकर जीवन में असफल हो जाता है। यह निर्विवाद है कि व्यक्ति यदि उचित निर्देशन के बिना शिक्षा प्राप्त करता है तो उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास की आशा नहीं की जा सकती, ना ही वह अपनी प्रतिभा व योग्यताओं से समाज की समुचित सेवा कर सकता है। आधुनिक शताब्दी के आरम्भ से निर्देशन के विषय में बहुत से देशों में मुख्यतः अमेरिका ने बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया था। अमेरिका के स्कूलों में निर्देशन का प्रचलन 1908 में बोस्टन वोकेशनल ब्यूरो की स्थापना के साथ हुआ। ब्यूरो का मुख्य अभिप्राय वयस्कों को व्यवसाय के चयन तथा समाज में अपनी स्थिति प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान करना था। ब्यूरो को अपने इस अभिप्राय की प्राप्ति में पर्याप्त रूप में सहायता मिली। परिणामस्वरूप 1910 में बोस्टन विद्यालय समिति ने बोस्टन के प्रत्येक हाई स्कूल में व्यावसायिक परामर्शदाता की नियुक्ति का आदेश दिया। इसके बाद अमेरिका में 'राष्ट्रीय शिक्षा संघ' तथा 'औद्योगिक शिक्षा विकास समिति' आदि संस्थाओं ने निर्देशन आंदोलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1934 ई. में विभिन्न संगठनों के कार्यों में समन्वय स्थापित करने के लिए निर्देशन एवं कर्मचारी संघों की समिति की स्थापना की गई। प्रथम महायुद्ध में निर्देशन आंदोलन का तेजी से विकास हुआ तब युद्ध की आवश्यकताओं के अनुरूप सैनिकों तथा अन्य अधिकारियों के वैज्ञानिक ढ़ंग से चुनाव तथा प्रशिक्षण की आवश्यकता का अनुभव किया गया। मानसिक स्वास्थ्य आंदोलन, बाल निर्देशन आंदोलन, उद्योगों में कर्मचारी कार्य तथा जाँच परीक्षा आंदोलन आदि में निर्देशन की आवश्यकता को एक आंदोलन के रूप में बढ़ावा दिया। सन् 1958 में 'व्हाइट हाऊस सम्मेलन' में निर्देशन कार्यक्रम के विकास एवं सुधार की आवश्यकता पर बल दिया गया। इस प्रकार से इस विषय की लोकप्रियता बढ़ती गई और आज वहाँ के प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम को बहुत महत्व दिया जाता है।

यदि निर्देशन सम्बन्धी साहित्य का अवलोकन किया जाए तो हमें इसके अर्थ तथा क्षेत्रों के विषय में विभिन्न

मत प्राप्त होंगे। यदि हम निर्देशन के शाब्दिक अर्थ पर विचार करें तो इसका तात्पर्य है निर्दिष्ट करना, बतलाना, मार्ग दिखाना आदि। इसका अर्थ सहायता करने से कहीं अधिक है। यदि कोई व्यक्ति सड़क पर गिर जाता है तो हम उसे उठने में सहायता करते हैं परन्तु हम उसका निर्देशन तब तक नहीं करते जब तक उसकी सहायता किसी निश्चित् दिशा में जाने के लिए नहीं करते। निर्देशन वह सहायता है, जो व्यक्ति की योग्यताओं, रूचियों, क्षमताओं, समस्याओं आदि को समझ कर उसे इस उद्देश्य से दी जाती है कि वह अपनी सम्भावनाओं को फलीभूत कर सके। निर्देशन द्वारा समस्याओं का समाधान नहीं किया जाता है, बल्कि व्यक्ति को समस्या का समाधान करने के योग्य बनाया जाता है। यह अन्र्तसम्बन्ध एक बहुमुखी प्रक्रिया है, जिसमें मानव जीवन को सुचारू बनाने हेतु अधिकाधिक संदर्भों का समावेश स्वतः आ जाता है।

निर्देशन व्यक्ति के जीवन के सभी क्षेत्रों में सहायक होता है। विशिष्ट क्षेत्रों में किया गया पथ प्रदर्शन उस विशिष्ट क्षेत्र से संबंधित निर्देशन कहा जा सकता है। यह शब्द सभी प्रकार की शिक्षा से जुड़ा हैः औपचारिक, अनौपचारिक, गैर औपचारिक एवं व्यावसायिक शिक्षा आदि, जिसमें व्यक्ति की सहायता करना ही उद्देश्य होता है ताकि वह अपने पर्यावरण में भावात्मक रूप से समायोजन कर सके। अन्य शब्दों में कहें तो व्यक्तियों को निर्देशन उपयुक्त चयन और समायोजन करने में दिया जाता है। निर्देशन को इसके विभिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित किया जा सकता हैः

गुड़ के अनुसार, "निर्देशन एक गतिशील अन्तः व्यैक्तिक संबंध की प्रक्रिया है जिसे व्यक्ति की अभिवृत्ति और अनुवर्ती व्यवहार को प्रभावित करने के लिए तैयार किया जाता है।"

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं की समीक्षा करने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि निर्देशन व्यक्तियों को समस्या के संबंध में सहायता देने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति को शैक्षिक, व्यावसायिक, मनोरंजन, सामाजिक सेवाओं और समस्त मानवीय क्रियाओं को तैयार करने में, उनमें प्रवेश पाने में और उनमें सफलता व उन्नति दिलाने में सहायता देती है। निर्देशन का कार्य व्यक्ति को योग्यताओं, अभिरूचियों और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप अपने को ढ़ालने में सहायता करना है। दूसरे शब्दों में निर्देशन एक सेवा है जिसका उद्देश्य व्यक्ति को उसकी पूर्ण परिपक्वता प्राप्त करने में सहायता करना है ताकि वह समाज की सेवा कर सकें। इसे वह उपकरण माना जाता है जो शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों को पूरा करने में सहायता करता है। अनेक विद्वानों ने निर्देशन के गतिशील स्वरूप पर बल दिया है।

अध्ययन का औचित्य

निर्देशन की आवश्यकता समय के साथ–साथ परिवर्तित होती रही है, परन्तु इसमें निरन्तरता बनी हुई है क्योंकि समस्याओं का अन्त नहीं होता। एक की समाप्ति के बाद, दूसरी जन्म ले लेती है और निर्देशन की आवश्यकता तदनुरूप बनी रहती है। आज युवा पीढ़ी अधिक तनावग्रस्त है। माता–पिता केवल इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते, अतः यह दायित्व आज शिक्षण संस्थाओं पर आ गया है।

विज्ञान की निरन्तर होने वाली प्रगति और तकनीकी विकास से सामाजिक और वैज्ञानिक दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे है। जीवन, संस्कृति, व्यवसाय सभी के मानदण्ड तेजी से बदल रहे है, जिनके कारण निर्देशन की आवश्यकता तेजी से अनुभव की जा रही है। व्यक्ति समाज की एक इकाई है। बदलते हुए परिवेश में व्यक्ति के विकास को सही दिशा प्रदान करने में निर्देशन का महत्वपूर्ण स्थान है। आज उसे अपनी समस्याओं के समाधान खोजने में अधिक कठिनाई अनुभव होती है। ज्ञान के पुराने सूत्रों का स्थान नवीन खोजों से उपलब्ध जानकारी ग्रहण कर रही है। अतः इस दृष्टि से नवीन माध्यमों की तलाश में निर्देशन महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के अवरोधक कारणों की खोज एवं निदान, निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं द्वारा सम्भव है। उचित व्यक्तित्व का विकास, समुचित शिक्षा एवं परिवेश द्वारा हो सकता है। निर्देशन, शिक्षा की भाँति एक सेवा है, जो एक व्यक्ति द्वारा दूसरे को प्रदान की जाती है। व्यक्ति में व्यक्तिगत भिन्नताएँ पायी जाती है। यह व्यक्तित्व, गुणों, बुद्धिलब्धि, रूचियाँ, अभिवृत्ति, अभियोग्यताओं, सामाजिक पर्यावरण के संदर्भ में होती है। विद्यार्थी का अपना

एक विशिष्ट व्यक्तित्व होता है और जीवन के हर मुकाम पर उसकी अपनी समस्याएँ व जरूरतें होती है। विकास की इस पेचीदा और गतिशील प्रक्रिया में शिक्षा अपना उत्प्रेरक योगदान दे सके; इसका उत्तरादायित्व विद्यालयों पर होता है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर निर्देशन के स्वरूप का निर्धारण छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप होता है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर निर्देशन का एक महत्वपूर्ण कार्य किशोर विद्यार्थियों की योग्यताओं के विकास, रूचियों, आकांक्षाओं, भावी योजनाओं को पहचानने में सहायक होना है अर्थात् विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से समझना व तदनुरूप परिस्थितियों का निर्माण करना होना चाहिए। इस स्तर पर विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की समस्याओं यथा – अच्छी उपलब्धि की, समायोजन की, स्वास्थ्य सम्बन्धी आदि का सामना करना पड़ता है।

सामान्यतः माध्यमिक शिक्षा तीन दायित्वों को पूरा करती है। सभी को उदार शिक्षा प्रदान करने का कार्य, व्यवसाय की ओर उन्मुख करने का कार्य तथा नेतृत्व की शिक्षा प्रदान करने का कार्य। माध्यमिक स्तर पर साधनों के अनुरूप किस क्षेत्र में उन्हें पदार्पण करना है, इन सभी का उचित दिशा अवबोध तभी सम्भव है जब विद्यार्थियों की मानसिक योग्यताओं, पारिवारिक पृष्ठभूमि, निवासीय परिवेश, शैक्षिक उपलब्धि स्तर आदि की जानकारी प्राप्त की जाये।

प्रत्येक स्तर पर निर्देशन का अपना विशिष्ट योगदान सम्भव है – जैसा कि पूर्व में वर्णित किया जा चुका है कि निर्देशन के विविध रूपों की प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर क्या भूमिका रहती है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में चिंतन, जिज्ञासा, कार्य करने की आदतें बन रही होती है, उनकी रूचियां, अरूचियां स्पष्ट होने लगती हैं, वे अपने भविष्य के बारे में सोचने लगते हैं। कोठारी आयोग (1965– 66) एवं नई शिक्षा नीति (1986) में भी इस स्तर पर निर्देशन सेवाओं की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

विद्यार्थियों की समस्याओं को आयु, लिंग, वातावरण, मानसिक योग्यताएँ, शैक्षणिक उपलब्धि, व्यक्तित्व शीलगुण आदि प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत शोध में इन समस्याओं को निम्नलिखित संदर्भों में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

इस प्रकार के प्रश्न शिक्षाविद्ों, नीति निर्माताओं, प्रशासकों, निर्देशन कार्यकर्त्ताओं व शोधकर्त्ताओं के लिए विचारणीय है।

इस दृष्टि से निरन्तर इस क्षेत्र में शोध कार्य हो रहे है परन्तु शोध कार्य की यथारूप में पुनरावृति न हो सके, इसके लिए इस क्षेत्र में शोधों का अध्ययन करना शोधार्थी ने उचित समझा।

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के प्रभाव के संदर्भ में अध्ययन न्यून दृष्टिगत हुए।

विभिन्न अध्ययनों से शोधकर्त्री को शोध समस्या का चयन, न्यादर्श चयन प्रदत्त संकलन हेतु उपकरणों के चयन हेतु दिशा मिली और अपने शोध अध्ययनार्थ निम्नांकित विषय का चयन किया गया।

समस्या कथन

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''।

शोध में प्रयुक्त शब्दावली

1. **उच्च माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थी:** प्रस्तावित शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों से तात्पर्य कक्षा XI एवं XII में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों से है।
2. **शैक्षिक समस्याः** इसका अर्थ अध्यापक की शारीरिक क्रियाओं से न होकर मानसिक क्रियाओं से लगाते हैं। इसमें शिक्षा के मूल अधिकार जैसे राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, समाजशास्त्रीय व वैज्ञानिक समस्याओं के ज्ञान के साथ–साथ राष्ट्रीय शिक्षा के क्रमिक विकास तथा शिक्षा के प्रति अर्न्तदृष्टि का विकास करना है।
3. **निर्देशनः** निर्देशन व्यक्ति के दृष्टिकोणों तथा उसके बाद के व्यवहार को प्रभावित करने के उद्देश्य से स्थापित गतिशील आपसी सम्बन्धों का एक प्रक्रम है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
6. उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध प्रबंध में निराकरणीय परिकल्पनाएँ निर्मित की गई है। शोधकर्त्री ने अपनी शोध समस्या से सम्बन्धित निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया हैः

H_{01} उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{02} उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{03} उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{04} उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{05} उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{06} उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या के अन्तर्गत राजस्थान के उच्च माध्यमिक स्तर के सभी छात्र–छात्राओं को लिया गया है।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ती ने उच्च माध्यमिक स्तर के कुल 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से चयनित किया है।

सीमित समय एवं साधनों के कारण शोधकर्त्ता ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव के सम्बन्ध में अध्ययन किया है।

चर

शोध अध्ययन में निम्न चरों को शामिल किया गया हैं:

- **स्वतंत्र चरः** शैक्षिक समस्या पर निर्देशन
- **आश्रित चरः** उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि को अपनाया जाएगा।

शोध के लिए उपकरण

शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली मापनी का प्रयोग किया जाऐगा।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जाएगाः

- मध्यमान।
- प्रमाणिक विचलन।
- 't' मूल्य।

परिसीमन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान के जयपुर जिले के राजकीय तथा निजी विद्यालयों में केवल राजस्थान माध्यमिक बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों को ही अध्ययनार्थ चयनित किया गया है।

परिकल्पनाओं का सत्यापन, विश्लेषण, व्याख्या एवं निष्कर्ष

परिकल्पना 1: उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	60	5.30	3.2625	2.72	अस्वीकृत
निजी विद्यालय के विद्यार्थी	60	6.68	3.8213		

df = N1 + N2 - 2 = 60+60 – 2 = 118

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 1 उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं निर्देशन सम्बन्धी समस्या के आयाम शैक्षिक समस्याओं को दर्शाती है। 't' की सारणी में df 118 पर 't' का मान 0.05 स्तर पर 1.97 तथा 0.01 स्तर पर 2.59 है। गणना किया गया मान 2.72 सारणी के मान से दोनों स्तर से अधिक है अर्थात् प्राप्त मान सार्थक है। अतः पूर्व निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्ष यह है कि दोनों ही समूहों की निर्देशन सम्बन्धी शैक्षिक समस्या के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना 2: उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालयों के छात्र	30	7.33	3.504	3	अस्वीकृत
निजी विद्यालयों के छात्र	30	9.08	3.224		

df = N1 + N2-2 = 58

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 2 उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक समस्याओं निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव के मध्यमानों को दर्शाती है। स्वतंत्रता चर 58 का 'टी' तालिका का मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.98 व 2.62 है। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 3 है जो कि 'टी' तालिका के दोनों स्तर से अधिक है। अतः पूर्व निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्ष यह है कि दोनों ही समूहों के शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव सार्थक अन्तर रखते है।

परिकल्पना 3: उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 3

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय की छात्राऐं	30	7.51	2.7246	5.15	अस्वीकृत
निजी विद्यालय की छात्राऐं	30	5.04	2.7709		

df = N1 + N2-2 = 58

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 3 उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय की छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाती है। स्वतंत्रता चर 58 का 'टी' तालिका का मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.98 व 2.62 है। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 5.15 है जो कि 'टी' तालिका के दोनों स्तर से अधिक है। अतः पूर्व निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्ष यह है कि दोनों ही समूहों के शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना 4: उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 4

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
शहरी विद्यार्थी	60	5.85	3.330	3.14	अस्वीकृत
ग्रामीण विद्यार्थी	60	4.22	2.564		

df = N1 + N2-2 = 118

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 4 उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाती है। स्वतंत्रता चर 118 का 'टी' तालिका का मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1. 98 व 2.59 है। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 3.14 है जो कि 'टी' तालिका के दोनों स्तर से अधिक है। अतः पूर्व निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्ष यह है कि दोनों ही समूहों की उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना 5: उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 5

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
शहरी छात्र	30	5.46	4.49	0.05	स्वीकृत
ग्रामीण छात्र	30	5.51	2.98		

df = N1 + N2-2 = 58

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 5 उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक समस्याओं निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाती है। स्वतंत्रता चर 58 का 'टी' तालिका का मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.98 व 2.62 है। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 0.05 है जो कि 'टी' तालिका के दोनों स्तर से कम है। अतः पूर्व निर्मित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्ष यह है कि दोनों ही समूहों की निर्देशन सम्बन्धी समस्या के आयाम विद्यालयी कार्यों से समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 6: उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 6

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
शहरी छात्राएँ	30	5.56	2.24	0.746	स्वीकृत
ग्रामीण छात्राएँ	30	6.03	2.50		

df = N1 + N2-2 = 58

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 6 उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाती है। स्वतंत्रता चर 58 का 'टी' तालिका का मूल्य 0.05 स्तर पर 1.98 है। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 0.746 है जो कि 'टी' तालिका के स्तर से कम है। अतः पूर्व निर्मित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्ष यह है कि दोनों ही समूहों के शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक फलितार्थ

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक एवं संक्रमण काल में निर्देशन की आवश्यकता प्रतिपल अनुभव की जा रही है क्योंकि जीवन संस्कृति एवं व्यावसाय सभी के मानदण्ड तेजी से बदलते जा रहे हैं। ऐसे समय में युवा पीढ़ी अपनी क्षमताओं एवं सृजनात्मक ऊर्जा का उपयोग करने में स्वयं को असमर्थ पा रही है। आज का विद्यार्थी अपने कॅरियर निर्माण के समय किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा खड़ा है। यदि इस समय उसे उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो जाए तो उसके जीवन की दिशा सकारात्मक रूख ले लेती है अन्यथा उचित व्यावसायिक निर्देशन के अभाव में शिक्षा उसकी क्षमताओं पर प्रश्नचिन्ह भी लगा सकती है। अतः बदलते हुए परिवेश में व्यक्ति के विकास को सही दिशा दिखाने में निर्देशन की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यार्थियों की शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक उन्नति में अवरोधक कारकों की खोज व निदान निर्देशन सेवाओं द्वारा ही संभव है। उचित व्यक्तित्व का विकास समुचित शिक्षा एवं परिवेश द्वारा संभव है। इस दृष्टि से शिक्षा संस्थाओं की महती भूमिका है। प्रमुख रूप से शिक्षण संस्थाओं के तीन कार्य हैं – शिक्षण, प्रबन्धन एवं निर्देशन। निस्संदेह विद्यालय में विद्यार्थियों की कठिनाइयों एवं समस्याओं का निदान एवं समाधान करने का प्रावधान होना चाहिए किन्तु आज अभिभावक भी इस जिम्मेदारी से पल्ला नहीं झाड़ सकते हैं।

किसी भी अनुसंधान की वास्तविक सार्थकता तब होती है जब वह समाजोपयोगी हो।

प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर निर्देशन के पड़ने वाले प्रभाव पर भी किया गया है। इस कारण प्रस्तुत शोध अभिभावकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

विद्यार्थियों के समक्ष विद्यालय संबंधी समस्याएँ भी आती हैं यथा – विद्यालय का अरूचिकर वातावरण, शिक्षकों का भेदभावपूर्ण व्यवहार, व्यक्तित्व विकास के अवसरों की अनुपलब्धता, कठिन विषयों में सहायता न मिल पाना, इच्छित पाठ्य सामग्री का उपलब्ध न हो पाना, खेलकूद के अवसरों का अभाव, अवकाशकालीन अवसरों के सुदपयोग का अभाव आदि।

उपर्युक्त समस्याएँ चाहे परिवार के कारण हों अथवा विद्यालयी वातावरण के कारण, विद्यार्थियों को दोनों ही अवस्थाओं में उचित निर्देशन की आवश्यकता होती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन अभिाावकों, शिक्षकों, शिक्षक–प्राक्षिणार्थियों, विद्यालय प्रबन्धकों, परामर्शदाताओं एवं विद्यार्थियों के लिए अतिलाभदायक सिद्ध होगा।

अभिभावकों के लिए

यह अध्ययन अभिभावकों को अपने बालकों की प्रत्येक क्षेत्र में आने वाली समस्याओं को जानने में सहायक सिद्ध हो सकेगा। वे बालक की रूचि, योग्यता एवं क्षमता को समझ सकेंगे। यह अध्ययन अभिभावकों को अपने बालकों की निर्देशन संबंधी समस्याओं के अनुसार भावी योजना बनाने में सहायक हो सकेगा, जिसके कारण उनके व बच्चों के मध्य उचित समझ व मधुर सम्बन्ध विकसित हो सकेंगे।

शिक्षकों के लिए

शिक्षक विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं को पहचानकर तदनुरूप उनकी आवश्यकतानुसार समस्याओं के संदर्भ में उचित निर्देशन सेवाओं की व्यवस्था कर सकेंगे। अपने स्तर पर विद्यालयी वातावरण में सकारात्मक परिवर्तन कर विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान में सहायक की भूमिका अदा कर सकेंगे।

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के लिए

प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षुओं को विद्यार्थियों को निर्देशन देने की तकनीकों एवं महत्व से अवगत कराने पर बल दिया जा सकेगा।

विद्यालयी प्रबन्धकों के लिए

इस अध्ययन में विद्यालयी अकादमिक वातावरण का भी अध्ययन किया गया है। विद्यालय के वातावरण का विद्यार्थियों की समस्याओं से संबंध पाया गया है। इस अनुरूप विद्यालयी प्रबन्धक अपने विद्यालयों के अकादमिक वातावरण में परिवर्तन करके विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान करके उनकी उपलब्धियों में वृद्धि कर सकेंगे।

परामर्शदाताओं के लिए

निर्देशन और परामर्श कार्यक्रम मुख्य रूप से समस्या आधारित है जब विद्यार्थियों की समस्याओं का पता लग जाता है तो उसके आधार पर निर्देशन और परामर्श कार्य बहुत आसान हो जाता है, अतः विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में आने वाली समस्याओं का अध्ययन कर परामर्शदाता उचित निर्देशन एवं परामर्श के द्वारा विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान करने में सहयोग कर सकेंगे।

विद्यार्थियों के लिए

यह अध्ययन विद्यार्थियों को स्वयं का मूल्यांकन करने में सहायक सिद्ध होगा। वे अपना लक्ष्य निर्धारित करने में समर्थ हो सकेंगे एवं किसी भी कार्य को पहल करने की योग्यता व निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में समर्थ हो सकेंगे।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव

- छात्रावास में रहने वाले एवं नियमित विद्यार्थियों की निर्देशन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- सामाजिक आर्थिक स्तर के संदर्भ में विद्यार्थियों की निर्देशन संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- अंग्रेजी–हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की निर्देशन संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- राजस्थान व अन्य राज्यों के विद्यार्थियों की निर्देशन संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- जिन विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रम चलाये जा रहे है एवं जिनमें निर्देशन एवं परामर्श उपलब्ध नहीं है इस प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- सह–शैक्षिक व समलिंगीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की निर्देशन संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे.सी., (1969) *एजूकेशनल वाकेशलन गाईडेंस एण्ड काउन्सलिंग,* दोआबा हाऊस, नई दिल्ली।
2. भटनागर, आर.पी. (2003) *शिक्षा अनुसंधान,* इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, पृ. 120।
3. भटनागर, सुरेश (1993), *अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार,* इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, चतुर्थ संस्करण, पृ. 128।
4. को. लेस्टर डी.; तथा क्रो, एलिस (1964) *निर्देशन परिचय,* यूरेशिया पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
5. चौहान, आर.एस (2001) *मनोवैज्ञानिक विकास के आधार,* साहित्य प्रकाशन, आगरा, पृ. 44–48।
6. चौबे, सरयू प्रसाद (2005) *शिक्षा मनोविज्ञान,* अनु प्रकाशन, जयपुर।
7. चौहान, विजय लक्ष्मी (2003) *गाइडेंस सर्विसेज इन स्कूल्स,* डौमीनेन्ट पब्लिक, न्यू देहली।
8. डाउनिंग लेस्टर, एस.एन.डी. (1964) *गाईडेंस एण्ड काउन्सलिंग सर्विसेज इन इन्ट्रोक्शन,* मैग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।
9. ढोढियाल, एस. (1982) *अनुसंधान का विधि शास्त्र,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ. 77–79।
10. दुग्गल, सत्यपाल (1991) *निर्देशन और परामर्श,* हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।
11. जोन्स, आर्थर (1963) *प्रिंसीपल्स ऑफ गाईडेंस,* मैग्रा हिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।
12. कुमावत, जगदीश प्रसाद (1977) *राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान,* शिक्षा विभाग, बीकानेर, राजस्थान, पृ. 169।
13. मोहन, सुदेश (1999) *कैरियर डवलपमैंट इन इण्डिया,* विकास पब्लिशिंग हाउस, देहली।
14. पाठक, पी.डी. (1971) *गाईडेंस एण्ड काउन्सिलिंग,* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
15. सिंह, रामपाल; उपाध्याय, राधा वल्लभ (1976) *शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशक,* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
16. शर्मा, आर.ए.; एण्ड चर्तुवेदी, शिखा (2002) *शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श,* सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

––==00==––